

## Twitter Thread by Anshul Pandey



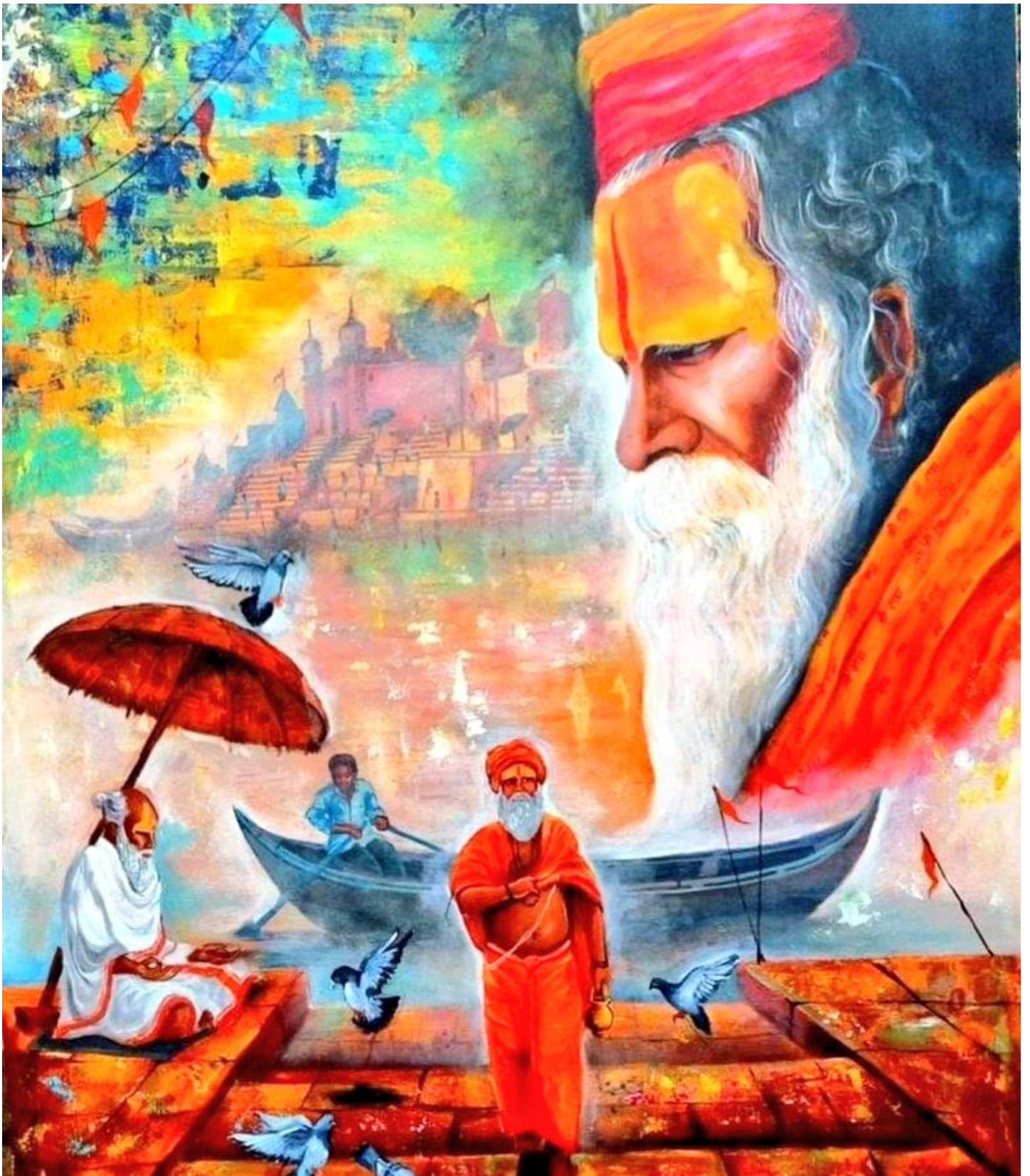
**Anshul Pandey**

@Anshulspiritual



### **BASIS OF VEDAS COMPILATION.**

The deeds or kriyas mentioned in the Vedas is indestructible, but the tradition of Yagya's should not be discontinued. Vedas are the writings of the observations made by the ancient sages.



As this oral tradition developed things started to get disorganized. As per Brahmand Puraan, in Dwapar yug Maharishi Vyas organized them and distributed them amongst his disciples for further clarification. The divisions were compiled from a single Yajurved & divided into 4 parts.

The work of compilation was distributed amongst Jaimini, Sumantu Vaishampayan and Paeel rishis. They came to be known as Rigved, Yajurved, Samved and Atharvaved. The fifth disciple was given the task of explaining and interpreting the Puraan and their history.

His name was Lomharshan, Whom we commonly know as Sutji.

1. In Rig Ved we mostly find the mantras pertaining to Yagya which can be sung for the worldly good and benefit. Also the importance of Priest emerged from here.



2. In Atharvaved, we find mantras pertaining to Brahmatatva or the spiritual and essential Truth. Here the karmakaand for the Kings was described in detail.



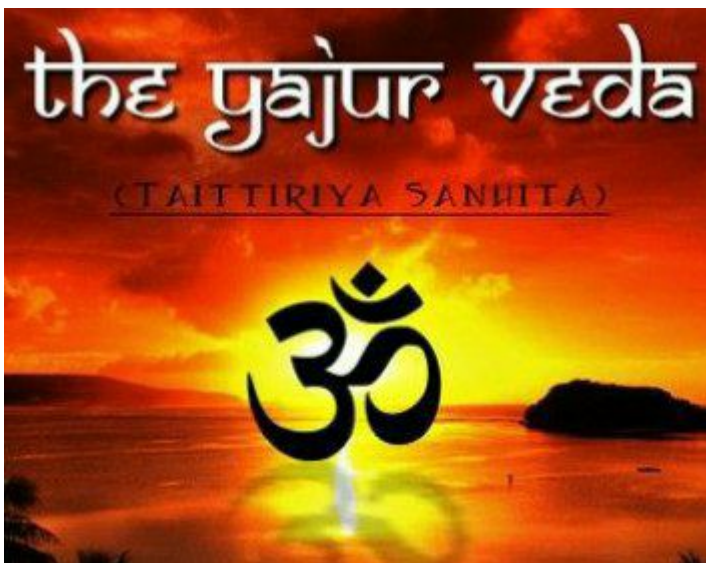


3.Samved:- Whatever part of the above mentioned Vedas was left out,it was compiled as Samved.



4.Yajurved:- Whatever was left from the compilation of Samved, was then compiled in Yajurved. It defines the ways and means of how a Yagya should be conducted.

Thereafter a long tradition of sages followed. In this tradition we find Rishi Yagyavalka who was one of the



most learned Rishi of his time. It is said that he was so sharp that none of the other rishis could answer his questions in King Janaks court. He was declared as the most learned one. Rishi Shakalya challenged him, On loosing had to face death penalty.

Reason behind division of Vedas in 4 parts as per Bhagwat puran\U0001f447

\u0915\u094d\u0937\u0940\u0923\u093e\u092f\u0941\u0937\u0903  
\u0915\u094d\u0937\u0940\u0923\u0938\u0924\u094d\u0924\u094d\u0935\u093e\u0928\u094d  
\u0926\u0941\u0930\u094d\u092e\u0947\u0927\u093e\u0928\u094d \u0935\u0940\u0915\u094d\u0937\u094d\u092f  
\u0915\u093e\u0932\u0924\u0903\u0964

\u0935\u0947\u0926\u093e\u0928\u094d \u092c\u094d\u0930\u0939\u094d\u092e\u0930\u094d\u0937\u092f\u094b  
\u0935\u094d\u092f\u0938\u094d\u0928\u094d  
\u0939\u0943\u0926\u093f\u0938\u094d\u0925\u093e\u091a\u094d\u092f\u0941\u0924\u091a\u094b\u0926\u093f\u0924\u0900

\u091c\u092c \u092c\u094d\u0930\u0939\u094d\u092e\u0935\u0947\u0924\u094d\u0924\u093e  
\u090b\u0937\u093f\u092f\u094b\u0902 \u0928\u0947 \u0926\u0947\u0916\u093e \u0915\u0940  
\u0938\u092e\u092f \u0915\u0947 \u092b\u0947\u0930 \u0938\u0947 \u0932\u094b\u0917\u094b\u0902  
\u0915\u0940 \u0906\u092f\u0941, \u0936\u0915\u094d\u0924\u093f \u0914\u0930  
\u092c\u0941\u0926\u094d\u0927\u093f \u0915\u094d\u0937\u0940\u0923 \u0939\u094b  
\u091c\u093e\u0924\u0940 \u0939\u0948,

1/3 [pic.twitter.com/JQcgda1SKZ](https://pic.twitter.com/JQcgda1SKZ)

— Anshul Pandey (@Anshulspiritual) June 29, 2020

Source- Brahmand puran

SS attached

अथ ब्रह्माण्डमहापुराणे पूर्वभागे द्वितीय अनुषंग पादे

## पञ्चत्रिंशत्तमोऽध्यायः

वेदव्यासाख्यान स्वायम्भुवमन्वतरवर्णनं नाम

सूत उवाच

देवमित्रश्च शाकल्यो महात्मा द्विजपुंगवः। चकार संहिताः पञ्च बुद्धिमान्वेदवित्तमः॥१॥  
पञ्च तस्याभवच्छिष्या मुद्गलो गोखलस्तथा। खलीयान्सुतपा वत्सः शैशिरेयश्च पञ्चमः॥२॥  
प्रोवाच संहितास्तिस्रः शाको वैणो रथीतरः। निरुक्तं च पुनश्चक्रे चतुर्थं द्विजसत्तमः॥३॥  
तस्य शिष्यास्तु चत्वारः पैलश्चेक्षलकस्तथा। धीमाञ्छ तबलाकश्च गजश्चैव द्विजोत्तमाः॥४॥

बाष्कलिस्तु भरद्वाजस्तिस्रः प्रोवाच संहिताः।

त्रयस्तस्याभवच्छिष्या महात्मानो गुणान्विताः॥५॥

धीमांश्च त्वापनापश्च पान्नगारिश्च बुद्धिमान्। तृतीयश्चार्जवस्ते च तपसा शंसितव्रताः॥६॥  
वीतरागा महातेजाः संहिताज्ञानपारगाः। इत्येते बह्वृचाः प्रोक्ताः संहिता यैः प्रवर्तिताः॥७॥  
वैशंपायनशिष्योऽसौ यजुर्वेदमकल्पयत्। षडशीतिस्तु तेनोक्ताः संहिता यजुषां शुभाः॥८॥  
शिष्येभ्यः प्रददौ ताश्च जगूहस्ते विधानतः। एकस्तत्र परित्यक्तो याज्ञवल्क्यो महातपाः॥९॥

षडशीतिस्तथा शिष्याः संहितानां विकल्पकाः।

सर्वेषामेव तेषां वै त्रिधा भेदाः प्रकीर्तिताः॥१०॥

श्री ब्रह्माण्डमहापुराण पूर्वभाग द्वितीय अनुषंग पाद

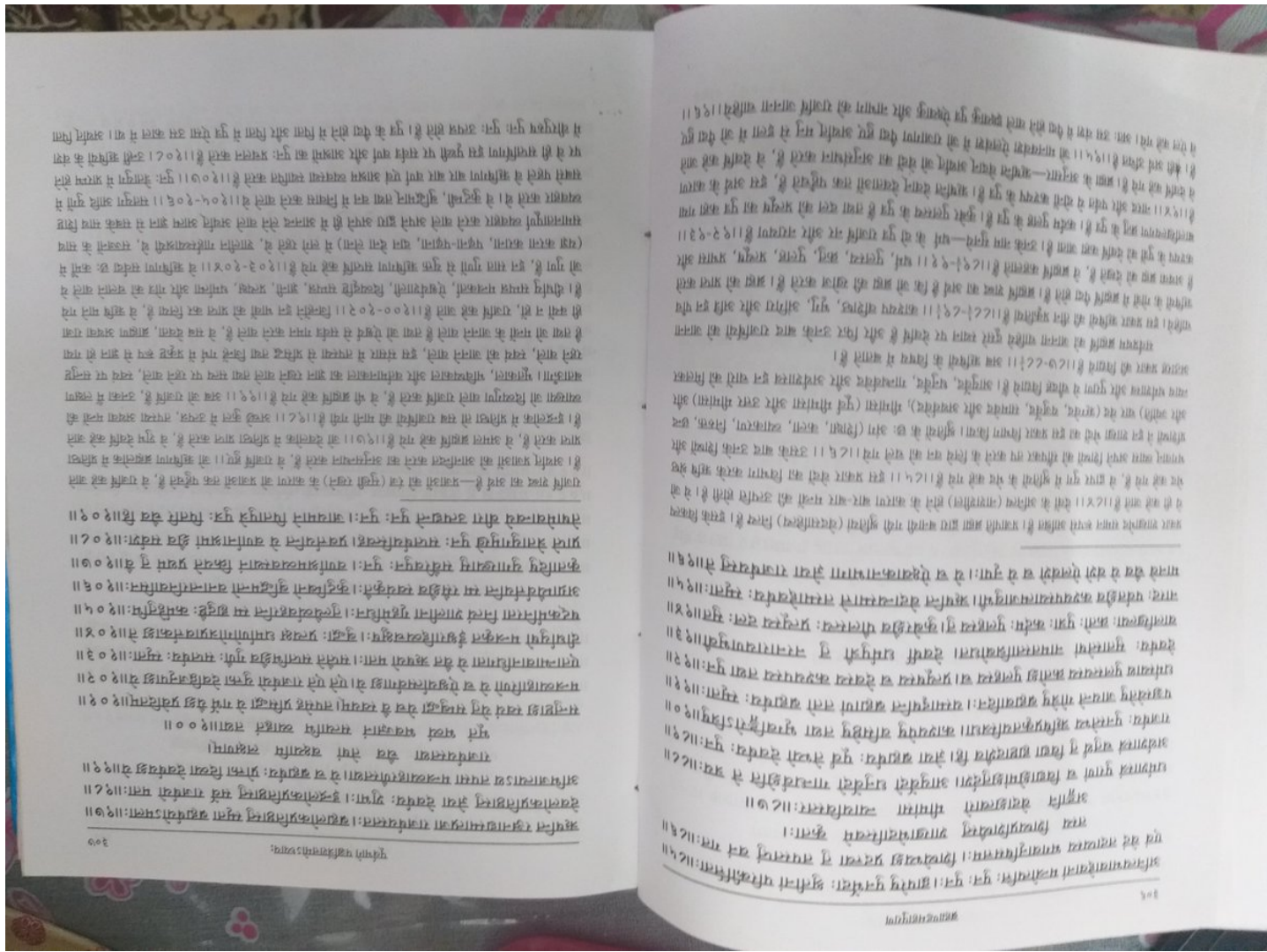
अध्याय-३५

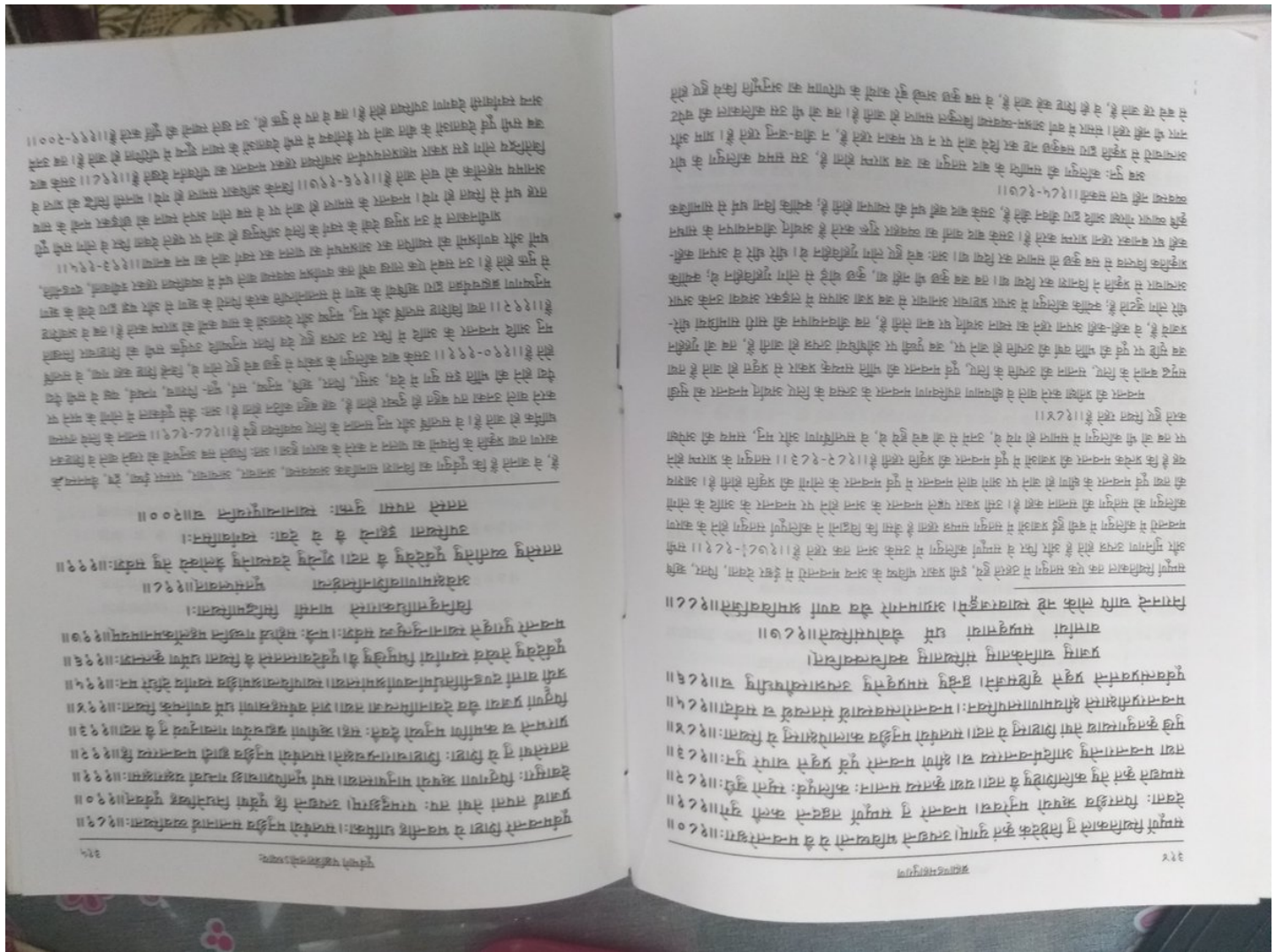
वेदव्यासाख्यान स्वायम्भुवमन्वतर वर्णन

सूत जी बोले कि वेदज्ञों में सर्वश्रेष्ठ, द्विजपुङ्गव देवों के मित्र परम बुद्धिमान् महात्मा शाकल्य ने वेद की पाँच संहिताओं की रचना की॥१॥ उनके पाँच शिष्य हुये वे हैं—मुद्गल, गोखल, खलीय, मत्स्य और पाँचवे शैशिरेय॥२॥ द्विजश्रेष्ठ शाकल्य ने शाक, वैणी और रथीतर तीन संहिताओं का प्रणयन किया। द्विजश्रेष्ठ शाकवैणी स्थीतर ने तीन संहिताओं का प्रणयन किया, फिर चौथे निरुक्त का प्रणयन किया॥३॥ उनके पैल, चेक्षलक, बुद्धिमान्, तबलाक और गज ये चार द्विजश्रेष्ठ शिष्य थे। बाष्कलि पुत्र भरद्वाज ने तीन संहिताओं का प्रवचन किया, उन महात्मा के गुणान्वित तीन शिष्य हुए॥५॥ पहला बुद्धिमान् आपनाम था, दूसरा बुद्धिमान् पान्नगारि था और तीसरा तप से प्रशंसित व्रत वाला आर्जव था॥६॥ ये तीनों शिष्यगण, वीतराग, महातेजस्वी और संहिताओं के पारङ्गत ऋषि थे। इन्होंने बहुत सी संहिताओं का प्रवर्तन किया। इसीलिए उन्हें बह्वृच कहा गया॥७॥

वैशम्पायन शिष्य ने यजुर्वेद की कल्पना की। उन्होंने यजुर्वेद की छः शुभसंहिता का प्रवचन किया और फिर उन्होंने उन संहिताओं को विधानपूर्वक अपने शिष्यों को प्रदान किया तथा शिष्यों ने विधानतः ग्रहण किया। उनमें केवल महातपस्वी याज्ञवल्क्य को छोड़ दिया॥८-९॥ तथा ८६ शिष्य संहिताओं के विकल्पक हुए और उन सबके







Facebook link ■  
<https://t.co/ARWJ4FQXVs>

Instagram link ■  
<https://t.co/S08F7WqMIR>